हजरत मरयम (अल) का वाकया

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

हदीस के इस्लाही मझामीन उर्दू [अल्लाह के नेक बंदो की करामत] से एक हिस्से का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हजरत इसा (अल) की वालिदा हजरत मरयम (अल) का वाकिया कुरान की आयत नंबर २५, २६ सूरे मरयम मे मौजूद हे.

जब वो हजरत इसा (अल) से हामिला हुवी और हजरत इसा (अल) की पैदाइश हो गयी तो उस वकत अल्लाह की तरफ से उन्को कहा गया था ए मरयम खजूर का दरख्त तुम्हारे लिये यहा पैदा कर दिया हे उस्के तने को हिलावो तो वो आप पर ताझा खजूरे गिरायेगा जहा हजरत इसा (अल) की पैदाइश हुवी थी वहा हजरत मरयम (अल) नकाहत की वजह से पडी हुवी थी तो अल्लाह ने उन्के वास्ते बतौरे करामत खाने पीने का इन्तेझाम कर दिया के खजूर का एक दरख्त वहा उगा

दिया और उस्पर ताझा खजूरे भी फौरन लग गयी और उन्को अल्लाह की तरफ से हिदायत की गयी के उस्को अगर हिला ओगी तो तुम्हारे उपर ताझा खजूरे गिरेगी उन खजूरो को खावो और अल्लाह ने तुम्हारे करीब चश्मा पैदा कर दिया हे उस्मे से पीवो.

एक और आयत पैश की आयत नंबर ३७ सूरे आले इमरान मे हजरत मरयम (अल) के वालिद हजरत इमरान बैयतुल मुकद्दस के खादिमो मेसे थे और उन्की वालिदाने मन्नत मानी थी के मुझे जो बच्चा होगा उस्को मे अपने या घरके काम काज मे नही लागाउन्गी बल्के बैतुल मुकद्दस की खिदमत के लिये फारिग करदून्गी उस ज़माना मे उस तरह की मन्नत मानी जाती थी के अपनी औलाद मे से किसी को अल्लाह के घर की खिदमत के लिये फारिग कर दिया जाये किसी दूसरे कामों मे लगाया ही न जाये.

तो हजरत मरयम (अल) अपनी वालिदा के पेट मे थी उसी ज़माने मे उन्के वालिद हजरत इमरान का इन्तेकाल हो गया आम तौर पर बैतुल मुकद्दस की खिदमत के लिये

लडके की मन्नत मानी जाती थी लेकीन जब बच्ची पैदा हुवी तो उन्की वालिदा को फिकर हुवी के मेने तो अपने पेट मे जो हमल था उस्के मुताल्लीक ये मन्नत थी के उस्को बैतुल मुकद्दस की खिदमत के लिये फारिग करदून्गी अब ये तो बच्ची हुवी और बैतुल मुकद्दस की इन झिम्मेदारीयों को मर्द और लडका संभाल सकता हे ये लडकी कैसे संभाल सकेगी अब कया करे, तो अल्लाह की तरफ से कहा गया के आप की उस मन्नत को अल्लाह के यहा कबूल कर लिया गया हे अब आप उसी लडकी को उस खिदमत के लिये फारिग करदो चुनान्चे उन्को फारिग कर दिया गया.

अब सवाल आया के उस बच्ची को कौन संभालेगा चूंके हजरत ज़करीय्या (अल) की अहलीया हजरत मरयम (अल) की खाला थी तो खालू होने के नाते हजरत ज़करीया (अल) ने मुतालबा किया के मे उस बच्ची की परवरिश करून्गा और उस्को अपने पास रखुन्गा इसलीये के उस्की खाला मेरे निकाह मे हे.

लेकीन बैतुल मुकद्दस के दूसरे खुद्दामने कहा के नही आप

हम्से बढकर उस्के हकदार नही हे लिहाझा सिर्फ आपके केहने से ये बच्ची आपके हवाले नही की जायेगी.

हजरत मरयम (अल) के वालिद भी बैतुल मुकद्दस के खुद्दाम मे से थे इसलीये सब खुद्दाम को उन्के साथ अकीदत और मुहब्बत थी लिहाझा हर शख्स ये चाहता था के उस बच्ची की परवरिश वो करे वैसे रिश्तेदारी के लिहाज़ से हजरत ज़करीया (अल) ही उस्के झियादा हकदार थे, लेकीन दूसरे हजरात भी अपना दावा छोडने के लिये तय्यार नही थे तो अब फैसले के लिये ये तदबीर इख्तीयार की गयी के नहर मे जो पानी जारी हे उस्मे वो सब लोग जो हजरत मरयम (अल) को अपनी परवरिश मे लेना चाहते हे अपना अपना कलम डाल दे जिस का कलम बहाउ के खिलाफ चलेगा वही उन्की परवरिश का हकदार होगा.

चुनान्चे ऐसा ही किया गया तो हजरत ज़करीया (अल) का कलम पानी के बहाउ के खिलाफ चल दिया और वोही परवरिश के हकदार ठेहरे और उन्होने हजरत मरयम

(अल) की परवरिश की झिम्मेदारी संभाल ली.

फिर उन्होने हजरत मरयम (अल) के लिये एक कमरा फारिग कर दिया के तुम इसी मे रहो और ज़करीया (अल) जब भी कही बाहर जाते तो उन्की हिफाज़त की खातिर उस कमरे को ताला लगा देते लेकीन जब वापिस आते और ताला खोलते तो वहा उन्के पास बहुत सारे फल फ्रूट रख्खे हूए देखते ये देखकर उन्को बहुत ताज्जूब होता के यहा तो कोइ भी आया गया नही खूद मे ही ताला लगा कर गया था फिर ये फल फ्रूट कहा से आते हे उस्के जवाब मे हजरत मरयम (अल) ने कहा ये अल्लाह के पास से आया हे अल्लाह जिस को चाहता हे बगैर हिसाब रोझी अता फरमाता हे.

हजरत मरयम (अल) के लिये अल्लाह की तरफ से ये इन्तेझाम हूवा था और ये एक ऐसी चीज़ थी जो हजरत मरयम (अल) के हाथो खिलाफे आदत झाहिर हुवी थी और हजरत मरयम (अल) पैगम्बर भी नही थी इसलीये ये करामत ही हुवी.